30 / 04 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

हाईएस्ट अथॉरिटी की स्थिति का आधार - कम्बाइन्ड रूप की स्मृति का अनुभव

➢➢ 1. शरीर और आत्मा का कम्बाइन्ड रूप

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने शरीर के साथ इस अनादि सृष्टि चक्र में अनादि पार्ट बजा रही हूँ...

→ मैं आत्मा हूँ और ये मेरा शरीर है...

→ मैं आत्मा चैतन्य हूँ और ये शरीर जड़ है...

→ मैं रचता हूँ और शरीर मेरी रचना है...

→ मैं अपने शरीर की मालिक हूँ...

→ इस शरीर के साथ कम्बाइन्ड होकर मैं आत्मा अपना पार्ट बजा रही हूँ...

- अज्ञानता में मैं आत्मा स्वयं को ही शरीर समझ बैठी थी...
- अपने असली स्वरुप को भूलकर देह-अभिमान में आ गई थी...
- देह-अभिमान में आकर अपना सबकुछ गँवा बैठी थी...
  - प्यारे बाबा ने आकर मुझे स्मृति दिलाई की मैं एक आत्मा हूँ...

→ अब मैं आत्मा सदा अपने शरीर और आत्मा के कम्बाइन्ड रूप को स्मृति में रखती हूँ...

- सदा अपने मालिकपन की स्मृति में स्थित रहती हूँ...
  - अपने कर्मेन्द्रियों के अधीन कभी नहीं आती हूँ...

➢➢ 2. पुरूषोत्तम संगमयुग पर बच्चों और बाप का कम्बाइन्ड रूप

➳ _ ➳ मैं ब्राह्मण आत्मा इस संगमयुग में बाप के साथ कम्बाइन्ड हूँ...

→ हाईएस्ट अथॉरिटी के साथ रहकर स्वयं भी हाईएस्ट अथॉरिटी बन रही हूँ...

→ सर्व शक्तिवान के साथ रहकर स्वयं भी मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव कर रही हूँ...

- विस्मृति के कारण मैं आत्मा स्वयं को कमजोर समझने लगी थी
- निर्बल और शक्तिहीन समझकर वशीभूत आत्मा बन गई थी...
- उदास होकर माया की दास बन गई थी...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा सदा बाप के साथ कम्बाइन्ड रूप की स्मृति में रहती हूँ...

→ कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से अब मैं आत्मा किसी भी प्रकार के

- माया के विघ्नों का सामना कर विजय प्राप्त कर रही हूँ...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा सदा अलौकिक कम्पैनियन की कम्पनी में ही रहती हूँ...

→ ये अलौकिक कम्पैनियन देहधारियों के समान

- कभी धोखा नहीं देता..
- दुःख नहीं देता
- कभी मूड ऑफ नहीं करते
- कभी रुलाते नहीं है

→ अलौकिक कम्पैनियन सदा

- हर्षाते हैं..
- सदा एक का हजार गुना देते हैं..
- सदा अपना निस्वार्थ प्रेम मुझ पर बरसाते हैं..
- सदा मुझ पर सुख, शांति की वर्सा करते हैं..
- जो अपने नयनों पर बिठाकर मुझे साथ ले जाएगा

➳ _ ➳ मैं आत्मा कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से समर्थ आत्मा बन रही हूँ...

→ संकल्पों में भी किसी भी व्यक्ति या वैभव के वशीभूत नहीं होती हूँ...

→ देहधारियों का सहारा लेकर बाप से कभी भी किनारा नहीं करती हूँ..

→ हद की प्राप्तियों के बनावटी आकर्षणों में नहीं पड़ती हूँ...

- सदा सच्चे साथी का साथ निभाकर बाप के दिलतख्त पर बैठ रही हूँ...
- एक कदम बढाकर बाप के हजार क़दमों के साथ का अनुभव कर रही हूँ...
- सदा स्मृति की अंगुली पकडे रहती हूँ...

➢➢ 3. यादगार रूप में कम्बाइन्ड चतुर्भुज रूप

➳ _ ➳ मैं कम्बाइन्ड चतुर्भुज रूप के चित्र को निहार रही हूँ...

→ यही मेरा लक्ष्य है...

→ अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ के बल पर इस लक्ष्य को पा रही हूँ...

→ सदा अपने अलंकारी यादगार स्वरूप की स्मृति में रहती हूँ...

- इस स्वरुप को स्मृति में रख सदा अपने को शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ...
- और मायाजीत बन रही हूँ...
- भविष्य तख्तनशीन बन रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा तीनों ही प्रकार के कम्बाइन्ड रूप को स्मृति में रख स्वयं को हाईएस्ट अथॉरिटी अनुभव कर रही हूँ...